प्रमाद होता है। ये तीनों गुण बन्धनकारी हैं; कोई मुक्ति का द्वार नहीं हो सकता। अधिक क्या, सत्त्वगुण में भी बन्धन बना रहता है। सत्रहवें अध्याय में नाना गुणों वाले मनुष्यों की उपासनाओं का वर्गीकरण है। अब श्रीभगवान् प्रकृति के गुणों के अनुसार ज्ञान, कर्म और कर्ता के भेद बतलाना चाहते हैं।

सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्।।२०।।

सर्वभूतेषु=सब प्राणियों में; **येन**=जिससे; **एकम्**=एक; **भावम्**=स्थिति; **अव्ययम्**=अविनाशी; **ईक्षते**=देखता है; **अविभक्तम्**=विभागरहित; **विभक्तेषु**=विभक्तों में; **तत्**=उस; **ज्ञानम्**=ज्ञान को; **विद्धि**=जान; **सात्त्विकम्**=सात्त्विक।

अनुवाद

जिस ज्ञान के द्वारा सब परस्पर विभक्त प्राणियों में एक विभागरहित परा प्रकृति दिखाई देती है, उसे तू सात्त्विक जान।।२०।।

तात्पर्य

जो पुरुष देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी, जलचर, वनस्पति आदि सभी प्राणियों में एक आत्मतत्त्व देखता है, वह सात्त्विक ज्ञान से युक्त है। सब जीवों में एक आत्मतत्व है, चाहे पूर्वकर्म के अनुसार उनके शरीर नाना प्रकार के हैं। सातवें अध्याय में कहा जा चुका है कि देह में चेतना का प्रकाश श्रीभगवान् की परा प्रकृति के कारण है। अतः देह-देह में एक परा प्रकृति—चेतना को देखना सात्त्विक दृष्टि है। नाशवान् शरीर में रहते हुए भी वह चेतन-शक्ति स्वयं-अविनाशी है। जीवों में भेद का अनुभव देह के रूप में होता है; कारण, बद्धावस्था में अनेक प्रकार की जीवयोनियाँ हैं। इसलिए वे विभक्त से प्रतीत होते हैं। ऐसे निर्विशेष ज्ञान से भी अन्त में स्वरूपसाक्षात्कार हो जाता है।

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्।।२१।।

पृथक्त्वेन=पृथकता के कारण; **तु**=परन्तु; **यत्**=जो; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **नानाभावान्**=नाना प्रकार की अवस्थाओं को; **पृथग्विधान्**=विविध; **वेत्ति**=जानता है; **सर्वेषु**=सब; **भूतेषु**=जीवों में; **तत्**=वह; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **विद्धि**=जान; **राजसम्**=राजस।

अनुवाद

जिस के द्वारा मनुष्य नाना प्रकार के देहों में भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवों को स्थित देखता है, उस ज्ञान को तू राजस जान।।२१।।

तात्पर्य

राजस ज्ञान का स्वरूप यह समझना है कि प्राकृत देह ही जीव है और देह के साथ-साथ चेतना का भी नाश हो जाता है। इसके अनुसार, शरीरों में भेद का कारण यह है कि उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की चेतना का विकास हुआ है तथा देह से पृथक्